



## ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड



# मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 24-12-2021

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2021-12-24 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2021-12-25	2021-12-26	2021-12-27	2021-12-28	2021-12-29
वर्षा (मिमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	5.0
अधिकतम तापमान(से.)	22.0	22.0	20.0	18.0	17.0
न्यूनतम तापमान(से.)	5.0	6.0	8.0	8.0	6.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	85	80	85	90	95
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	55	55	60	60	65
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6.0	6.0	6.0	8.0	8.0
पवन दिशा (डिग्री)	130	100	100	70	120
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	1	4	4	8

### मौसम सारांश / चेतावनी:

विगत सात दिनों (17-23 दिसम्बर, 2021) में 0.0 मिमी वर्षा हुई व आसमान साफ रहने के साथ घने बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 14.0 से 23.0 डि०से० एवं न्यूनतम तापमान 2.4 से 5.4 डि०से० के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 90 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 29 से 77 प्रतिशत एवं हवा 0.8 से 5.4 कि०मी० प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा से चली। आगामी पांच दिनों में, 28 दिसम्बर को कहीं-कहीं हल्की वर्षा की सम्भावना है तथा शेष दिन आमतौर पर मौसम साफ रहेगा। अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 17.0 से 22.0 व 5.0 से 8.0 डिग्री सेल्सियस रहेगा। हवा के 6.0-8.0 किमी/घंटे की गति से पूर्व-उत्तर-पूर्व व दक्षिण-पूर्व दिशा से चलने का अनुमान है। ईआरएफएस के अनुसार, 29 दिसम्बर व 4 जनवरी के दौरान राज्य में वर्षा सामान्य से अधिक, अधिकतम तापमान सामान्य से कम व न्यूनतम तापमान सामान्य रहने का अनुमान है।

### सामान्य सलाहकार:

किसान भाई पिछले सप्ताह के मौसम, मौसम पूर्वानुमान और मौसम आधारित कृषि सलाह प्राप्त करने के लिए "मेघदूत ऐप" तथा आकाशीय बिजली के पूर्वानुमान हेतु "दामिनी ऐप" डाउनलोड करें। मेघदूत व दामिनी ऐप को गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं) और ऐप स्टोर (आईओएस उपयोगकर्ताओं) से डाउनलोड किया जा सकता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त एनडीवीआई व एसपीआई मानचित्रों ने संकेत दिया कि उधम सिंह नगर के लिए पिछले हफ्ते एनडीवीआई 0.2-0.4 के बीच है, यानी जिले में कृषि स्थिति मध्यम है तथा एसपीआई मैप 25 नवम्बर से 22 दिसम्बर तक हल्की नमी की स्थिति को दर्शाता है। सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें।

### लघु संदेश सलाहकार:

आगामी पांच दिनों में, 28 दिसम्बर को कहीं-कहीं हल्की वर्षा की सम्भावना है तथा शेष दिन आमतौर पर मौसम साफ रहेगा। रसायनों का प्रयोग मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर करें।

### फसल विशिष्ट सलाह:

फसल	फसल विशिष्ट सलाह
गेहूँ	गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 25-30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45-50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही है साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते हैं।
सरसों	सरसों में माहुँ का प्रकोप होने पर थायमैथोकजाम 25 डब्ल्यू जी की 50-100 ग्रा० मात्रा का 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

### बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
---------	----------------------

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
अमरुद	अमरुद को कैंकर नामक बीमारी से बचाने हेतु, फल लगने के बाद कॉपर हाइड्रॉक्साइड का 2 ग्राम प्रति लीटर का छिड़काव करें। बेर के आकार फूल आने के 50 दिन बाद फलों की बैगिंग करते समय फोम नेट का उपयोग करने से फल को चोट लगने से रोका जा सकता है।
लीची	लीफ कर्ल माइट का प्रकोप होने पर, प्रभावित भागों को काटकर जला दें और फिर क्लोरफेनेपायर या प्रोपरगाइट का 3 मि.ली./लीटर की दर से छिड़काव करें।
आलू	आलू के पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु, आलू उत्पादक किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि इस स्थिति में साइमोजेनिल + मैन्कोजेब अथवा डाइमिथोमाफ + मैन्कोजेब अथवा फैनामिडान + मैन्कोजेब में से किसी एक सम्मिश्रण फफूंदनाशी का 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। रोग की अत्याधिक तीव्रता बढ़ने पर ऊपर दिये गये किसी एक सम्मिश्रण फफूंदनाशी का 10-15 दिन के अन्तराल में पुनः छिड़काव करें लेकिन किसान भाईयों से अनुरोध है कि एक सम्मिश्रण फफूंदनाशी का एक बार ही छिड़काव हेतु प्रयोग करें। सम्मिश्रण फफूंदनाशी के छिड़काव उपरान्त रोग की तीव्रता कम होने पर आवश्यकतानुसार मैन्कोजेब नामक फफूंदनाशी का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

**पशुपालन विशिष्ट सलाह:**

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
गाय	इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
भैंस	भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकेराविटूलरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान - नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं। पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।